स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्री–चेतना का समीक्षात्मक अध्ययन

बेबी कुमारी

वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण का विषय स्वयं में एक महत्वपूर्ण चर्चा का विषय बना हुआ है। इस प्रकार से महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु उनमें चेतना का उद्‌भव नितांत आवश्यक है। यदि इस विषय पर ऐतिहासिक रुप से नजर डाला जाय तो सभ्यता के विकास में स्त्री–चेतना का महत्वपूर्ण योगदान है। यद्यपि प्राचीन भारत में वैदिककालीन महिलाओं के चेतनाओं का अवलोकन किया जाय तो समकालीन समाज में पुरुषों के समान शिक्षा प्राप्त करने, धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करने, राजनैतिक भागीदारी तथा आर्थिक क्रियाकलाप में सहयोग करने के साथ ही सम्पति में उत्तराधिकार जैसे लगभग सभी अधिकार प्राप्त थे। महिलाओं को अपने जीवनसाथी चुनने की स्वतंत्रता तथा अपनी इच्छा से अविवाहित रहने का सामाजिक अधिकार भी महिलाओं के जागरूक चेतना का प्रदर्शन करता है परन्तु जैसे–जैसे हमारा सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक जीवन सशक्त होते गया वैसे–वैसे पर्दा–प्रथा, रीति–रिवाज, पर्दा प्रथा तथा मर्यादाओं के आड़ में महिलाओं को घर के चहारदीवारी तक सीमित कर दिया गया। अतः 21वीं सदी के दहलीज पर चलते हुए हमें स्त्री–चेतना पर चिंतन की नितान्त आवश्यकता महसूस हो रही है।